

# NEXT IAS

## दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 9-09-2024

### विषय सूची

आर्कटिक सागर की बर्फ भारत में मानसून के पैटर्न से जुड़ी हुई है

भारत में जनगणना में विलम्ब

भारत की सैन्य कूटनीति

सैन्य क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का जिम्मेदार उपयोग (REAIM)

### संक्षिप्त समाचार

गैलेथिया खाड़ी

अरब सागर में चक्रवात इतने सामान्य क्यों नहीं हैं?

स्वच्छ वायु सर्वेक्षण पुरस्कार

समग्र शिक्षा योजना

ब्रिक्स रोजगार कार्य समूह बैठक 2024

बेपिकोलम्बो

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान में 'टील कार्बन' पर भारत का पहला अध्ययन किया गया (KNP)

नीलगिरि माउंटेन रेलवे

इंडियासाइज (INDIAsize) पहल

केंद्र सरकार कामकाजी महिलाओं के छात्रावासों के लिए रैंकिंग शुरू करेगी

## आर्कटिक सागर की बर्फ भारत में मानसून के पैटर्न से जुड़ी हुई है

### सन्दर्भ

- भारत के राष्ट्रीय ध्रुवीय एवं महासागर अनुसंधान केंद्र (NCPOR) के शोधकर्ताओं ने एक अध्ययन में पाया है कि आर्कटिक समुद्री बर्फ में मौसमी परिवर्तन भारतीय मानसून को प्रभावित कर रहा है।

### भारतीय ग्रीष्मकालीन मानसून वर्षा क्या है?

- जुलाई से सितंबर तक भारतीय उपमहाद्वीप में होने वाली भारतीय ग्रीष्मकालीन मानसून वर्षा (ISMR) विश्व की सबसे प्रमुख मानसून प्रणालियों में से एक है।
- गर्मियों के महीनों में, सूरज की रोशनी मध्य एशियाई और भारतीय भूभाग को आसपास के महासागर की तुलना में अधिक और तेजी से उष्ण करती है।
  - इससे कर्क रेखा पर एक निम्न दाब बैंड का निर्माण होता है जिसे अंतर-उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र (ITCZ) कहा जाता है।
- दक्षिण-पूर्व से बहने वाली व्यापारिक हवाएं भूमध्य रेखा को पार करने के बाद कॉरियोलिस बल और निम्न दबाव के कारण भारतीय भूभाग की ओर मुड़ जाती हैं।
  - अरब सागर के ऊपर से बहने वाली हवाएं नमी को ग्रहण कर लेती हैं और उसे भारत में वर्षा के रूप में एकत्रित कर देती हैं।
- भूभाग पर, दक्षिण-पश्चिमी मानसून दो भागों में विभाजित हो जाता है। अरब सागर की एक शाखा पश्चिमी तट पर वर्षा लाती है, जबकि दूसरी शाखा बंगाल की खाड़ी की ओर जाती है और भारत के पूर्वी तथा पूर्वोत्तर भागों में वर्षा लाती है।
- अरब सागर की एक शाखा अंदर की ओर बढ़ती है और बंगाल की खाड़ी की एक शाखा हिमालय के साथ आगे बढ़ती है, जिससे ये दोनों शाखाएँ अंततः पंजाब एवं हिमाचल प्रदेश में मिल जाती हैं।

### भारतीय ग्रीष्मकालीन मानसून वर्षा की जटिलता

- पिछले दो दशकों में, जलवायु मॉडल ने दिखाया है कि भारतीय, अटलांटिक और प्रशांत महासागरों के सतही तापमान ISMR को प्रभावित करते हैं।
- मध्य अक्षांशों पर बहने वाली बड़े पैमाने की वायुमंडलीय लहर, सर्कम-ग्लोबल टेलीकनेक्शन (CGT), मानसून को भी महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

### भारतीय मानसून पर आर्कटिक समुद्री बर्फ का प्रभाव

- शोध से पता चलता है कि मध्य आर्कटिक में समुद्री बर्फ कम होने से पश्चिमी और प्रायद्वीपीय भारत में कम बारिश होती है, लेकिन मध्य और उत्तरी भारत में अधिक बारिश होती है।

- दूसरी ओर, ऊपरी अक्षांशों में समुद्री बर्फ का स्तर कम होता है, विशेष रूप से हडसन की खाड़ी, सेंट लॉरेंस की खाड़ी और ओखोटस्क सागर को घेरने वाले बैरेंट्स-कारा सागर क्षेत्र में, मानसून की शुरुआत में देरी होती है तथा यह अधिक अप्रत्याशित हो जाता है।

### पैटर्न को प्रभावित करने वाली अन्य वायुमंडलीय प्रणालियाँ

- वैज्ञानिकों ने पाया कि जब मध्य आर्कटिक में समुद्री बर्फ का स्तर बढ़ता है, तो महासागर से वायुमंडल में स्थानांतरित होने वाली गर्मी उत्तरी अटलांटिक की तरह थोड़े निचले अक्षांशों पर चक्रवाती परिसंचरण को सक्रिय करती है।
- इससे रॉस्बी तरंगें बनती हैं, अर्थात् हवा की तेज़ धारा, जो पृथ्वी के घूमने और तापमान तथा मौसम प्रणालियों में अंतर के कारण पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ती है। इसके परिणामस्वरूप उत्तर-पश्चिम भारत पर उच्च दबाव एवं भूमध्यसागरीय क्षेत्र पर कम दबाव बनता है।
  - यह बदले में कैस्पियन सागर के ऊपर एशियाई जेट स्ट्रीम नामक हवा के एक संकीर्ण, केंद्रित बैंड को मजबूत करता है, जिससे उपोष्णकटिबंधीय पूर्वी जेट, गर्मियों के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप पर बहने वाली एक जेट स्ट्रीम, उत्तर की ओर स्थानांतरित हो जाती है।

यह पश्चिमी और प्रायद्वीपीय भारत में अधिक वर्षा लाता है।

- दूसरी ओर, जैसे-जैसे इस क्षेत्र में समुद्री बर्फ का स्तर घटता है, बैरेंट्स-कारा सागर से गर्मी बढ़ती है, जिससे उत्तर-पश्चिम यूरोप में एक प्रतिचक्रवाती परिसंचरण (शांत, साफ आसमान) उत्पन्न होता है।
  - इससे उपोष्णकटिबंधीय एशिया तथा भारत के ऊपरी वायुमंडलीय क्षेत्र में बाधा उत्पन्न होती है और पूर्वोत्तर भारत में भारी वर्षा होती है, जबकि देश के मध्य एवं उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में अधिक वर्षा नहीं होती।

### जलवायु परिवर्तन की भूमिका

- जलवायु परिवर्तन आर्कटिक समुद्री बर्फ की कमी को तेज करके ISMR की परिवर्तनशीलता और अप्रत्याशितता को बढ़ाता है।
- आर्कटिक समुद्री बर्फ के कम होने से कुछ क्षेत्रों में लगातार और गंभीर सूखे की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, जबकि अन्य क्षेत्रों में अत्यधिक वर्षा एवं बाढ़ आ सकती है।
- इसके अतिरिक्त अध्ययन जलवायु गतिशीलता पर अनुसंधान का विस्तार करने और वैज्ञानिकों द्वारा लगातार परिवर्तित मानसून के अधिक सटीक पूर्वानुमान तैयार करने की तत्काल आवश्यकता को दर्शाता है।

Source: [IH](#)

## भारत में जनगणना में विलम्ब

### सन्दर्भ

- केंद्रीय सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय ने सांख्यिकी पर 14 सदस्यीय स्थायी समिति (SCoS) को भंग कर दिया है।
  - आधिकारिक कारण यह बताया गया कि समिति का कार्य हाल ही में गठित राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संचालन समिति के कार्य से सम्बंधित है।

### परिचय

- SCoS का गठन 2023 में किया गया था और इसका उद्देश्य सर्वेक्षण पद्धति पर केंद्र सरकार को परामर्श देना था, जिसमें नमूना फ्रेम, नमूना डिजाइन और सर्वेक्षण उपकरण सम्मिलित थे तथा सर्वेक्षणों की सारणीबद्ध योजना को अंतिम रूप देना था।
- भारत की दशकीय जनगणना 1870 के दशक से प्रत्येक दस वर्ष में आयोजित की जाती रही है, और पिछली जनगणना 2011 में आयोजित की गई थी।
- अगली जनगणना, जो 2021 के लिए निर्धारित है, शुरू में COVID-19 महामारी के कारण विलंबित हो गई थी, और अभी तक अधिसूचित नहीं की गई है।
- कई अर्थशास्त्रियों ने चिंता व्यक्त की है कि अधिकांश सांख्यिकीय सर्वेक्षणों के लिए उपयोग किए जाने वाले डेटा सेट अभी भी 2011 की जनगणना से लिए जा रहे हैं, जिससे उनकी सटीकता और गुणवत्ता प्रभावित हो रही है।

### जनगणना क्या है?

- जनगणना किसी विशिष्ट क्षेत्र के अंदर जनसंख्या के जनसांख्यिकीय, आर्थिक और सामाजिक डेटा के आवधिक और व्यवस्थित संग्रह को संदर्भित करती है।
- यह सामान्यतः सरकारों द्वारा जनसंख्या की विशेषताओं और जीवन स्थितियों के बारे में विस्तृत जानकारी एकत्र करने के लिए आयोजित की जाती है।

जनगणना महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करती है जिसका उपयोग सरकारें, व्यवसाय, शोधकर्ता और नीति निर्माता विभिन्न उद्देश्यों जैसे सार्वजनिक सेवाओं की योजना बनाने, धन आवंटित करने और सूचित निर्णय लेने के लिए करते हैं।

### भारत में जनगणना

- भारत में जनगणना 1871 से नियमित रूप से की जाती रही है। पहली पूर्ण जनगणना 1881 में की गई थी।
- **संवैधानिक अधिदेश:** भारत की जनगणना 1948 के जनगणना अधिनियम के प्रावधानों के तहत की जाती है, जो भारत सरकार को समय-समय पर जनसंख्या सर्वेक्षण करने का अधिकार देता है।

- **आवृत्ति:** भारत की जनगणना दशकीय आधार पर की जाती है, जिसका अर्थ है कि यह प्रत्येक दस वर्ष में होती है।
  - सबसे हालिया जनगणना 2011 में आयोजित की गई थी।

### जनगणना का महत्व

- **नीति निर्माण:** यह शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, बुनियादी ढांचे के विकास और सामाजिक कल्याण से संबंधित नीतियों की योजना बनाने तथा उन्हें तैयार करने के लिए महत्वपूर्ण इनपुट प्रदान करता है।
- **संसाधन आवंटन:** यह जनसंख्या वितरण, जनसांख्यिकी और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों पर डेटा प्रदान करके संसाधनों के समान वितरण में सहायता करता है।
- **जनसांख्यिकीय रुझान:** यह जनसांख्यिकीय रुझान, शहरीकरण पैटर्न, प्रवास प्रवाह और जनसंख्या वृद्धि दर को समझने में सहायता करता है।
- **विकास लक्ष्यों की निगरानी:** जनगणना डेटा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विकास लक्ष्यों, जैसे सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की दिशा में प्रगति की निगरानी में सहायक है।

### भारत में जनगणना में देरी क्यों हो रही है?

- **कोविड-19 महामारी:** कोविड-19 महामारी ने जनगणना जैसे बड़े पैमाने के सर्वेक्षणों सहित विभिन्न गतिविधियों के शेड्यूलिंग और नियोजन को महत्वपूर्ण रूप से बाधित किया है।
- **तैयारी और नियोजन:** भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश में जनगणना आयोजित करने के लिए विभिन्न सरकारी विभागों में सावधानीपूर्वक नियोजन, संसाधन जुटाने और समन्वय की आवश्यकता होती है।
- **राजनीतिक और प्रशासनिक प्राथमिकताएँ:** सरकारें अन्य गतिविधियों या चुनावों को प्राथमिकता देती हैं, जिससे जनगणना प्रक्रिया में देरी होती है।
- **तकनीकी और पद्धतिगत उन्नयन:** डेटा संग्रह, प्रसंस्करण और विश्लेषण के लिए उपयोग की जाने वाली तकनीक तथा कार्यप्रणाली में समय-समय पर अपडेट एवं सुधार के लिए अतिरिक्त समय और संसाधनों की आवश्यकता होती है।
- **डेटा संग्रह की जटिलता:** भूगोल, भाषाओं, संस्कृतियों और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों के संदर्भ में भारत की विविधता एक व्यापक जनगणना आयोजित करने में अद्वितीय चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है।

### निष्कर्ष

- जनगणना के आंकड़ों को कोविड-19 महामारी के दौरान 'अतिरिक्त मृत्युओं' के विश्लेषण के आधार पर मृत्यु दर के विभिन्न अनुमानों को मान्य करना चाहिए।
- यह आवश्यक है कि शहरीकरण और राज्यों में लोगों के प्रवास से संबंधित भारत की जनसांख्यिकी में दशकीय बदलावों को पर्याप्त रूप से दर्ज किया जाए। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली जैसी कल्याणकारी योजनाएं जनसंख्या

अनुमानों पर निर्भर करती हैं और सरकार 2011 की जनगणना पर निर्भर रहती है, जो अब पुरानी हो चुकी है।

- शासन के लिए प्रशासनिक, कल्याण तथा सांख्यिकीय प्रबंधन की सुचारू योजना और कार्यान्वयन के लिए इन और अन्य अनिवार्यताओं को ध्यान में रखते हुए, सरकार को जनगणना शुरू करने में उत्सुकता दिखानी चाहिए।

Source: TH

## भारत की सैन्य कूटनीति

### समाचार में

- भारत विभिन्न देशों के साथ उच्च स्तरीय अभ्यासों की श्रृंखला के माध्यम से सैन्य कूटनीति में सक्रिय रूप से सम्मिलित रहा है।

### रक्षा कूटनीति के बारे में

- यह रक्षा से संबंधित साधनों और गतिविधियों का सहयोगात्मक तथा शांतिपूर्ण तरीके से उपयोग करके विदेश एवं रणनीतिक नीति का समर्थन करना है।
- भारत की रक्षा कूटनीति अब हिंद महासागर से आगे तक फैल गई है।
  - यह भूमध्य सागर और गिनी की खाड़ी क्षेत्र के देशों के साथ सहयोग कर रहा है।
- भारत अपनी क्षेत्रीय रक्षा कूटनीति और साझेदारी को तेज़ कर रहा है, जिसका लक्ष्य एशिया-प्रशांत तथा हिंद महासागर क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति को मज़बूत करना है।
- भारत की रक्षा कूटनीति चीन की मुखरता से प्रेरित है, विशेषकर दक्षिण चीन सागर में।

### हालिया विकास

- **बढ़ी हुई सैन्य भागीदारी:** भारत ने 2023 में साझेदार देशों के साथ 75 संयुक्त सैन्य अभ्यास किए, जो पिछले वर्षों की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि है।
  - इन अभ्यासों में द्विपक्षीय, त्रिपक्षीय और बहुपक्षीय प्रारूप शामिल हैं, जिनमें क्षेत्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय साझेदारों की संख्या बढ़ रही है।
- **एशिया-प्रशांत और हिंद महासागर पर ध्यान:** 2023 में भारत की सैन्य गतिविधियों में थाईलैंड, आसियान तथा यूरोपीय संघ के सदस्य राज्यों के साथ पहली बार नौसैनिक अभ्यास और इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस एवं यूएई के साथ समुद्री साझेदारी शामिल है।
  - भारतीय नौसेना के बंदरगाहों पर दौरे और अभ्यासों का विस्तार हुआ है, तथा ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया एवं सिंगापुर में पनडुब्बी के उल्लेखनीय दौरे हुए हैं।
- **सामरिक:** भारत की बढ़ी हुई रक्षा भूमिका और साझेदारी का उद्देश्य चीन के बढ़ते प्रभाव का सामना करना है।

- भारत की कार्रवाइयों में ऑस्ट्रेलिया तथा फ्रांस जैसे देशों के साथ संयुक्त गश्त और समुद्री सहयोग शामिल है, जो इस क्षेत्र में एक प्रमुख सुरक्षा साझेदार के रूप में स्वयं को स्थापित करने के व्यापक प्रयास को दर्शाता है।
- भारत मानवीय सहायता तथा आपदा राहत (HADR) कार्यों में सक्रिय रहा है, और हिंद महासागर क्षेत्र एवं उससे आगे की आपदाओं का सामना करता रहा है।

### समस्याएँ

- भारत राष्ट्रीय सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए विदेशों से रक्षा प्रणालियाँ खरीदता है, विशेषकर अपने सीमित घरेलू तकनीकी और औद्योगिक आधार के कारण।
- भारत में अभी भी विदेश नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए रक्षा कूटनीति का पूरी तरह से लाभ उठाने के लिए संस्थागत तंत्र का अभाव है, जो मुख्य रूप से पारंपरिक कूटनीतिक दृष्टिकोणों पर निर्भर करता है।
- जैसे-जैसे भारत क्षेत्रीय और वैश्विक शक्तियों के साथ अपनी सैन्य भागीदारी को गहरा करता है, यह चीन के साथ प्रतिस्पर्धात्मक गतिशीलता को बढ़ा सकता है।
- भारत नए क्षेत्रों में अपनी सैन्य राजनयिक उपस्थिति का विस्तार कर रहा है, मॉस्को जैसे प्रमुख स्थानों पर रक्षा सम्बन्ध को कम करने के प्रभाव के बारे में चिंताएँ हैं, जहाँ रूस के साथ भारत के रक्षा संबंध विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।

### निष्कर्ष और आगे की राह

- भारत ने अब्राहम समझौते और चीन के बढ़ते प्रभाव जैसे परिवर्तित क्षेत्रीय गतिशीलता के बीच पश्चिम एशियाई देशों के साथ रक्षा संबंधों को दृढ़ किया है।
- भारत क्षेत्रीय कूटनीति को दृढ़ करने, साझेदारी बनाने और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीनी प्रभाव का मुकाबला करने के लिए अपनी रक्षा क्षमताओं का लाभ उठा रहा है।
  - इन प्रयासों को जारी रखने के लिए नौसैनिक, अभियान और सैन्य क्षमताओं में निरंतर निवेश की आवश्यकता होगी।
- अब भारत की रक्षा कूटनीति स्वदेशीकरण और उपकरण विकास में आत्मनिर्भरता पर बल देती है।
- इसलिए भारतीय रक्षा उद्योगों का समर्थन करना तथा निर्यात को बढ़ावा देना रणनीतिक स्वायत्तता में योगदान देना आवश्यक है और सहयोगात्मक सुरक्षा उपाय, संयुक्त अभ्यास एवं सूचना साझा करना भी महत्वपूर्ण घटक हैं।

### क्या आप जानते हैं ?

- **युद्ध अभ्यास:** राजस्थान के महाजन फील्ड फायरिंग रेंज में 9 सितंबर, 2024 को शुरू होने वाला यह भारत-अमेरिका का सबसे बड़ा बहुपक्षीय अभ्यास है।
- **तरंग शक्ति:** भारतीय वायुसेना का सबसे बड़ा बहुपक्षीय अभ्यास दो चरणों में हो रहा है। सुलूर में 6-14 अगस्त तक आयोजित प्रथम चरण में जर्मनी, फ्रांस, स्पेन और यू.के. की भागीदारी थी। जोधपुर में 1-14 सितंबर तक चल रहे दूसरे चरण में ऑस्ट्रेलिया, ग्रीस, जापान, सिंगापुर, श्रीलंका, यू.ई. तथा अमेरिका के विमान शामिल हैं, हालांकि बांग्लादेश ने इसमें भाग नहीं लिया।
- **मालाबार अभ्यास:** विशाखापत्तनम के तट पर अक्टूबर 2024 में होने वाला यह नौसैनिक अभ्यास भारत, ऑस्ट्रेलिया, जापान और अमेरिका की भागीदारी वाला है।
- **इंद्र अभ्यास:** मालाबार के तुरंत बाद, भारतीय सेना की मशीनीकृत पैदल सेना की टुकड़ी रूस के साथ इस द्विपक्षीय अभ्यास में भाग लेगी।
- **मित्र शक्ति:** श्रीलंका के साथ इसका 10वां संस्करण 12-25 अगस्त तक श्रीलंका में आयोजित किया गया।
- **खान केस्ट:** भारत ने 27 जुलाई से 9 अगस्त तक आयोजित इस बहुराष्ट्रीय शांति अभ्यास के लिए मंगोलिया में 40 कर्मियों को भेजा।
- **RIMPAC:** भारतीय नौसेना के INS शिवालिक ने 27 जून से 1 अगस्त तक अमेरिकी नौसेना द्वारा आयोजित इस प्रमुख अभ्यास में भाग लिया।
- **वरुण:** भारतीय नौसेना के INS तबर और एक P-81 विमान ने भूमध्य सागर में 2-4 सितंबर तक फ्रांस के साथ इस द्विपक्षीय अभ्यास में भाग लिया।

Source: TH

### सैन्य क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का जिम्मेदार उपयोग (REAIM)

#### सन्दर्भ

- सैन्य क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के जिम्मेदार उपयोग (REAIM) पर शिखर सम्मेलन सियोल, दक्षिण कोरिया में शुरू हो गया है।

#### परिचय

- यह AI के सैन्य अनुप्रयोगों पर वैश्विक मानदंडों को आकार देने के लिए नई वैश्विक कूटनीति का भाग है।



- शिखर सम्मेलन की मेजबानी केन्या, नीदरलैंड, सिंगापुर और यूनाइटेड किंगडम द्वारा की जा रही है।
- यह शिखर सम्मेलन का दूसरा संस्करण है; पहला 2023 में नीदरलैंड के हेग में हुआ था।
- शिखर सम्मेलन के तीन-स्तरीय उद्देश्य हैं:
  - वैश्विक शांति और सुरक्षा पर सैन्य AI के निहितार्थों को समझना,
  - सैन्य मामलों में AI प्रणालियों के उपयोग पर नए मानदंडों को लागू करना, और
  - सैन्य क्षेत्र में AI के दीर्घकालिक वैश्विक शासन पर विचार विकसित करना।

### कृत्रिम बुद्धिमत्ता

- कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) कंप्यूटर विज्ञान की एक व्यापक शाखा है, जो ऐसी स्मार्ट मशीनों के निर्माण से संबंधित है जो ऐसे कार्य करने में सक्षम हैं जिनके लिए सामान्यतः मानव बुद्धि की आवश्यकता होती है।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता मशीनों को मानव मस्तिष्क की क्षमताओं को मॉडल बनाने या उनमें सुधार करने की अनुमति देती है।
- स्व-चालित कारों के विकास से लेकर ChatGPT और Google के बार्ड जैसे जनरेटिव AI टूल के प्रसार तक, AI तेजी से दैनिक जीवन का हिस्सा बनता जा रहा है - और एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें प्रत्येक उद्योग निवेश कर रहा है।

### सैन्य क्षेत्र में AI का अनुप्रयोग

- जबकि AI का प्रयोग लंबे समय से प्रमुख सेनाओं द्वारा इन्वेंट्री प्रबंधन और रसद योजना के लिए किया जाता रहा है, पिछले कुछ वर्षों में, युद्ध के मैदान की खुफिया जानकारी, निगरानी और टोही में AI का उपयोग काफी सीमा तक बढ़ गया है।
- प्रमुख सेनाएँ युद्ध के मैदान से विशाल मात्रा में डेटा के संग्रह, संश्लेषण और विश्लेषण को बदलने के लिए AI की क्षमता देखती हैं।
  - यह परिस्थितिजन्य जागरूकता बढ़ाने, बल प्रयोग पर निर्णय लेने के लिए उपलब्ध समय बढ़ाने, लक्ष्य निर्धारण में सटीकता बढ़ाने, नागरिक हताहतों की संख्या को सीमित करने तथा युद्ध की गति बढ़ाने में उपयोगी हो सकता है।
- विभिन्न आलोचकों ने चेतावनी दी है कि युद्ध में AI के ये कथित आकर्षण भ्रामक और खतरनाक हो सकते हैं।
- तथाकथित AI निर्णय लेने वाली सहायता प्रणालियों (AI-DSS) का प्रसार और उनके निहितार्थ उन मुद्दों में से हैं जिन पर अब REAIM प्रक्रिया के तहत वाद-विवाद हो रहा है।

### विनियमन की आवश्यकता

- इस भय से कि युद्ध का संचालन कंप्यूटर और एल्गोरिदम द्वारा किया जाएगा, इन हथियारों को नियंत्रित करने की मांग उठी थी।

- बल के उपयोग पर निर्णय लेने की प्रक्रिया में मनुष्यों को शामिल रखना इस चर्चा का एक प्रमुख उद्देश्य रहा है।
- 2019 से जिनेवा में संयुक्त राष्ट्र में सरकारी विशेषज्ञों के एक समूह के अंदर घातक स्वायत्त हथियार प्रणालियों (LAWS) से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की गई है।
- REAIM प्रक्रिया ने इस बात को मान्यता देकर कि AI सिस्टम युद्ध में पहले से कहीं अधिक अनुप्रयोग पा रहे हैं, बहस को 'हत्यारे रोबोट' से आगे बढ़ाकर मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुँचा दिया।

### सैन्य मामलों में AI का जिम्मेदार उपयोग

- REAIM प्रक्रिया जिम्मेदार AI को बढ़ावा देने की विभिन्न पहलों में से एक है - राष्ट्रीय, द्विपक्षीय, बहुपक्षीय और बहुपक्षीय।
- अमेरिका ने अपने नाटो सहयोगियों को भी इसी तरह के मानदंड अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया है।
  - नाटो की 2021 की रणनीति ने AI के जिम्मेदार सैन्य उपयोग के लिए छह सिद्धांतों की पहचान की और अपने बलों के लिए दिशा-निर्देशों का एक समुच्चय प्रस्तुत किया।
  - इसका उद्देश्य AI प्रणालियों के उपयोग को "तेज़" करना है जो नाटो के लिए सैन्य लाभ उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन "सुरक्षित और जिम्मेदार" तरीके से।
- विश्व को युद्ध में AI का कम से कम प्रयोग देखने को मिल रहा है; यह ऐतिहासिक प्रवृत्ति के अनुरूप है कि सभी नई प्रौद्योगिकियों को अंततः सैन्य अनुप्रयोग मिलेंगे।
- REAIM प्रक्रिया इसे पहचानती है - और इस तरह के उपयोग से संभावित विनाशकारी परिणामों को देखते हुए, विचार मानदंडों का एक सहमत समुच्चय विकसित करने का है।

Source: IE

## संक्षिप्त समाचार

### गैलेथिया खाड़ी

#### समाचार में

- भारत सरकार ने गैलेथिया खाड़ी स्थित अंतर्राष्ट्रीय ट्रांस-शिपमेंट हब को 'प्रमुख बंदरगाह' के रूप में नामित किया है।

- भारत में वर्तमान में 12 प्रमुख बंदरगाह और लगभग 200 गैर-प्रमुख बंदरगाह कार्यरत हैं, जिनमें से लगभग 65 बंदरगाह माल ढुलाई का कार्य करते हैं और अन्य बंदरगाह मछली पकड़ने वाले जहाजों तथा नौकाओं की सेवा करते हैं।

### गैलेथिया खाड़ी के बारे में

- गैलेथिया खाड़ी भारत के केंद्र शासित प्रदेश अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के ग्रेट निकोबार द्वीप में स्थित है, जो पूर्वी हिंद महासागर (बंगाल की खाड़ी) में स्थित है।
  - ये द्वीप लगभग 836 अपतटीय द्वीपों का एक द्वीपसमूह है और ग्रेट निकोबार इस द्वीपसमूह का सबसे दक्षिणी द्वीप है।
- यह भारत में "महत्वपूर्ण समुद्री कछुआ आवासों" में से एक है।
- गैलेथिया खाड़ी परियोजना को चार चरणों में विकसित किया जाएगा, जिसमें चरण 1 के 2028 तक चालू होने की सम्भावना है, जो लगभग 4 मिलियन TEUs को संभालेगा और 2058 तक 16 मिलियन TEUs तक बढ़ जाएगा।
  - इस सुविधा का उद्देश्य वर्तमान में विदेशी बंदरगाहों पर संभाले जाने वाले ट्रांसशिप्ड कार्गो के एक महत्वपूर्ण भाग को प्राप्त करना है।
- इसका प्रबंधन केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय द्वारा किया जाएगा तथा इसे सार्वजनिक-निजी भागीदारी मॉडल के तहत केंद्रीय वित्त पोषण प्राप्त होगा।

Source: [ET](#)

### अरब सागर में चक्रवात इतने सामान्य क्यों नहीं हैं?

#### सन्दर्भ

- अरब सागर में अगस्त माह में आए दुर्लभ चक्रवात 'आसना' ने गुजरात के तट को पार कर मौसम विज्ञानियों को चकित कर दिया है।

#### पृष्ठभूमि

- ऐतिहासिक रूप से, उत्तरी हिंद महासागर, जिसमें बंगाल की खाड़ी और अरब सागर दोनों शामिल हैं, वार्षिक लगभग पाँच उष्णकटिबंधीय चक्रवातों का अनुभव करता है।
- बंगाल की खाड़ी में सामान्यतः अरब सागर की तुलना में चार गुना अधिक चक्रवात आते हैं, जिनमें से अधिकांश मई और नवंबर में आते हैं।
- पश्चिमी अरब सागर सामान्यतः अरब प्रायद्वीप से आने वाली ठंडी समुद्री तापमान और शुष्क हवा के कारण चक्रवात निर्माण के लिए अनुपयुक्त होता है। ये परिस्थितियाँ बंगाल की खाड़ी के चक्रवात-अनुकूल वातावरण से बिल्कुल अलग हैं।

### जलवायु परिवर्तन के प्रति महासागर की प्रतिक्रिया

- जलवायु परिवर्तन के कारण अब प्रशांत महासागर से अधिक गर्मी आ रही है, जबकि दक्षिणी महासागर भी गर्म पानी को कर रहा है।

- इन इनपुट के कारण हिंद महासागर तेजी से गर्म हो रहा है, साथ ही हवाओं और आर्द्रता में वायुमंडलीय परिवर्तन भी हो रहा है।
- उत्तरी हिंद महासागर और मानसून अब उष्णकटिबंधीय महासागरों के साथ-साथ ध्रुव-से-ध्रुव प्रभावों से संबंधित जलवायु परिवर्तन चालकों पर प्रतिक्रिया कर रहे हैं।
- ये सभी क्षेत्र-विशिष्ट विशिष्टताएँ चक्रवातों की संख्या, चक्रवातों की संख्या और हिंद महासागर पर जलवायु परिवर्तन के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं में भूमिका निभाती हैं।

Source: [TH](#)

## स्वच्छ वायु सर्वेक्षण पुरस्कार

### समाचार में

- नीले आसमान के लिए स्वच्छ वायु के अंतर्राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर नौ सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले NCAP शहरों को पुरस्कृत किया गया, जिसे स्वच्छ वायु दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

### परिचय

- स्वच्छ वायु सर्वेक्षण पुरस्कार राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (NCAP) के तहत पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) द्वारा शुरू की गई एक नई पहल है, जिसका उद्देश्य वायु गुणवत्ता में सुधार के लिए शहरों के प्रयासों के आधार पर उन्हें रैंक और मान्यता देना है।
- **मानदंड:** ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, औद्योगिक उत्सर्जन, सड़क की धूल आदि।
- वितरित पुरस्कार:
  - श्रेणी-1 (10 लाख से अधिक जनसंख्या) के तहत सूरत, जबलपुर और आगरा को;
  - श्रेणी-2 (3 से 10 लाख के बीच की जनसंख्या) के तहत फिरोजाबाद, अमरावती और झांसी को;
  - श्रेणी-3 (3 लाख से कम जनसंख्या) के तहत रायबरेली, नलगोंडा और नालागढ़ को।

Source: PIB

## समग्र शिक्षा योजना

### सन्दर्भ

- तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने प्रधानमंत्री मोदी को पत्र लिखकर समग्र शिक्षा योजना के तहत लंबित अनुदान जारी करने में तेजी लाने की मांग की।

## परिचय

- योजना के तहत 2024-25 के लिए राज्य के लिए 3,586 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया, जिसमें से केंद्र सरकार का भाग 2,152 करोड़ रुपये (60%) है।
- 573 करोड़ रुपये की पहली किस्त जारी होना बाकी है।

## समग्र शिक्षा योजना

- यह स्कूल शिक्षा क्षेत्र के लिए केंद्र सरकार द्वारा प्रायोजित योजना है, जो प्री-स्कूल से कक्षा 12 तक के लिए है और इसका उद्देश्य स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर समावेशी और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करना है।
- इस योजना में तीन पूर्ववर्ती केंद्र प्रायोजित योजनाएं शामिल हैं;
  - सर्व शिक्षा अभियान (SSA),
  - राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA) और
  - शिक्षक शिक्षा (TE)।
- योजना के प्रमुख उद्देश्य हैं:
  - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) की सिफारिशों को लागू करने में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का समर्थन करना;
  - बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार (RTE) अधिनियम, 2009 के कार्यान्वयन में राज्यों का समर्थन करना;
  - प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करना;
  - बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता आदि पर बल देना।

Source: [TH](#)

## ब्रिक्स रोजगार कार्य समूह बैठक 2024

### सन्दर्भ

- रूसी अध्यक्षता में ब्रिक्स रोजगार कार्य समूह (EWG) की दूसरी और अंतिम बैठक सोची, रूस में आयोजित की गई।
  - चर्चा के प्राथमिकता वाले क्षेत्र थे - आजीवन शिक्षा के लिए रणनीतियां, व्यावसायिक मार्गदर्शन, रोजगार सेवाओं का आधुनिकीकरण, सुरक्षित और स्वस्थ कार्य स्थितियां सुनिश्चित करना, तथा सामाजिक सहायता तंत्र।

### ब्रिक्स के बारे में

- ब्रिक्स एक संक्षिप्त शब्द है जो पांच प्रमुख उभरती राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं के समूह को संदर्भित करता है: ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका।
  - मिस्र, इथियोपिया, ईरान और संयुक्त अरब अमीरात इस वर्ष नए पूर्ण सदस्य के रूप में ब्रिक्स में शामिल हुए हैं।

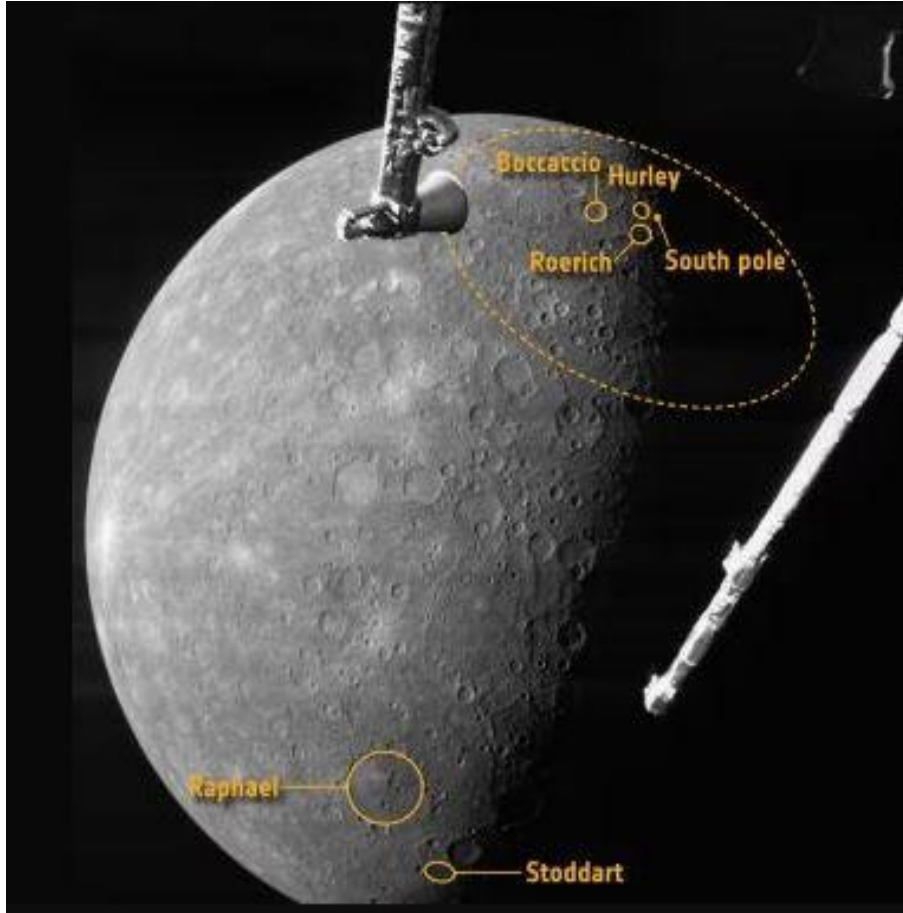
- यह शब्द मूल रूप से अर्थशास्त्री जिम ओ'नील द्वारा 2001 में दिया गया था।
- ब्रिक्स विश्व के पांच सबसे बड़े विकासशील देशों को एक साथ लाता है, जो वैश्विक जनसंख्या का लगभग 41%, वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 24% और वैश्विक व्यापार का लगभग 16% प्रतिनिधित्व करता है।
- **उत्पत्ति:** एक औपचारिक समूह के रूप में, BRIC की शुरुआत 2006 में G8 आउटरीच शिखर सम्मेलन के दौरान सेंट पीटर्सबर्ग में रूस, भारत और चीन के नेताओं की बैठक के बाद हुई।
  - इस समूह को 2006 में न्यूयॉर्क में UNGA के दौरान BRIC विदेश मंत्रियों की पहली बैठक के दौरान औपचारिक रूप दिया गया था।
  - इस बैठक की सफलता के परिणामस्वरूप BRIC के तत्वावधान में एक वार्षिक शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया।
  - प्रारंभ में, समूह को BRIC कहा जाता था क्योंकि 2010 में दक्षिण अफ्रीका को इसमें शामिल किया गया था और तब से इसे BRICS के रूप में संदर्भित किया जाने लगा।
- **शिखर सम्मेलन:** ब्रिक्स देशों की सरकारें 2009 से प्रत्येक वर्ष औपचारिक शिखर सम्मेलनों में मिलती रही हैं।
- समय के साथ, ब्रिक्स देश तीन स्तंभों के तहत महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार-विमर्श करने के लिए एक साथ आए हैं:
  - राजनीतिक और सुरक्षा,
  - आर्थिक और वित्तीय और सांस्कृतिक और
  - लोगों से लोगों के बीच आदान-प्रदान।
- **न्यू डेवलपमेंट बैंक:** जिसे पहले ब्रिक्स डेवलपमेंट बैंक के नाम से जाना जाता था, यह ब्रिक्स देशों द्वारा स्थापित एक बहुपक्षीय विकास बैंक है।
  - बैंक ऋण, गारंटी, इक्विटी भागीदारी और अन्य वित्तीय साधनों के माध्यम से सार्वजनिक या निजी परियोजनाओं को समर्थन देगा।

Source: PIB

## बेपिकोलम्बो

### सन्दर्भ

- अंतरिक्ष यान, बेपिकोलम्बो ने वैज्ञानिकों को बुध के दक्षिणी ध्रुव का पहला स्पष्ट दृश्य दिखाया।
  - इसने ग्रह के विभिन्न क्रेटर को भी कैद किया, जिनमें बेसिन के किनारे के अंदर चोटियों के असामान्य छल्ले वाले क्रेटर भी शामिल थे।



### बेपिकोलम्बो

- यह यूरोपीय और जापानी अंतरिक्ष एजेंसियों के बीच एक संयुक्त मिशन है, जिसे 2018 में प्रक्षेपित किया गया था।
- यह अपने मूल आगमन समय के लगभग एक वर्ष पश्चात् 2026 में बुध की कक्षा में जाएगा।
  - अंतरिक्ष यान के थ्रस्टर्स से जुड़ी समस्याओं को दूर करने के प्रयासों के कारण यह देरी हुई।
- इसमें दो ऑर्बिटर हैं, एक बुध के परिदृश्य पर अधिक केंद्रित है और दूसरा इसके आसपास के अंतरिक्ष वातावरण के बारे में डेटा एकत्र करता है।
- वैज्ञानिकों को आशा है कि बेपिकोलंबो मिशन का उपयोग ग्रह की संरचना, भूविज्ञान और चुंबकीय क्षेत्र का अध्ययन करके इसकी उत्पत्ति और विकास के बारे में जानने के लिए किया जाएगा।

### बुध

- बुध सूर्य के सबसे निकट का ग्रह है, और सौरमंडल का सबसे छोटा ग्रह है - जो पृथ्वी के चंद्रमा से थोड़ा ही बड़ा है।
- सूर्य से अपनी निकटता के बावजूद, बुध सौरमंडल का सबसे गर्म ग्रह नहीं है - यह शुक्र है।

- बुध पर एक दिन पृथ्वी के 59 दिनों के बराबर होता है।
- बुध पर एक वर्ष पृथ्वी के 88 दिनों के बराबर होता है।
- शुक्र, पृथ्वी और मंगल के साथ, बुध भी चट्टानी ग्रहों में से एक है।
- वायुमंडल के बजाय, बुध के पास एक पतला बहिर्मंडल है जो सौर हवा और उल्कापिंडों द्वारा सतह से उड़ाए गए परमाणुओं से बना है।
- बुध का बहिर्मंडल अधिकांशतः ऑक्सीजन, सोडियम, हाइड्रोजन, हीलियम और पोटेशियम से बना है। बुध का कोई चंद्रमा नहीं है।

Source: IE

## केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (KNP) में 'टील कार्बन' पर भारत का पहला अध्ययन किया गया

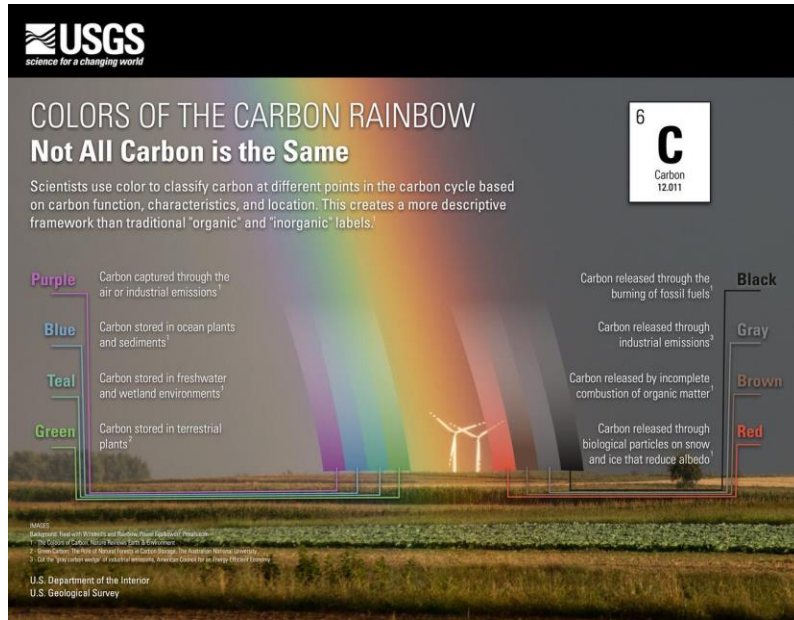
### समाचार में

- राजस्थान के केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (KNP) में टील कार्बन पर किया गया भारत का पहला अध्ययन, जलवायु परिवर्तन से निपटने में आर्द्रभूमि संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डालता है।
  - केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान को 1985 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।

### परिचय

- टील कार्बन, एक रंग-आधारित शब्दावली के रूप में, कार्बनिक कार्बन को उसके भौतिक गुणों के बजाय गैर-ज्वारीय मीठे पानी के आर्द्रभूमि (जैसे, पीटलैंड, दलदल और कच्छ भूमि) के अंदर उसके कार्यों और स्थान के आधार पर वर्गीकृत करता है।
- यह आर्द्रभूमि वनस्पति, माइक्रोबियल बायोमास और घुले हुए कार्बनिक पदार्थों में संग्रहीत कार्बन का प्रतिनिधित्व करता है, जो कार्बन डाइऑक्साइड को अलग करके जलवायु परिवर्तन शमन में महत्वपूर्ण योगदान देता है।
- ये आर्द्रभूमि ग्रीनहाउस गैसों को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, लेकिन प्रदूषण और क्षरण के प्रति संवेदनशील हैं।





### अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष

- **टील कार्बन पारिस्थितिकी तंत्र:** यदि आर्द्रभूमि का क्षरण होता है, तो वे वातावरण में मीथेन और कार्बन डाइऑक्साइड जैसी ग्रीनहाउस गैसों को छोड़ सकते हैं। अध्ययन में पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने के लिए तत्काल संरक्षण और प्रबंधन की आवश्यकता बताई गई है।
- **मीथेन उत्सर्जन:** अध्ययन में KNP की आर्द्रभूमि में मीथेन के उच्च स्तर पाए गए, जिससे उत्सर्जन को कम करने के लिए बायोचार अनुप्रयोग जैसे उपायों की आवश्यकता पर बल दिया गया।
- **वैश्विक महत्व:** वैश्विक स्तर पर, टील कार्बन पारिस्थितिकी तंत्र लगभग 500.21 पेटाग्राम कार्बन (PgC) संग्रहीत करते हैं, जो जलवायु परिवर्तन को कम करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

Source: TH

### नीलगिरि माउंटेन रेलवे

#### समाचार में

- रेलवे स्टेशनों के आधुनिकीकरण और उन्नयन के लिए शुरू की गई अमृत भारत स्टेशन योजना, नीलगिरि माउंटेन रेलवे स्टेशन के ऐतिहासिक और स्थापत्य मूल्य को खतरे में डालती है। रेलवे स्टेशनों के आधुनिकीकरण और उन्नयन के लिए शुरू की गई अमृत भारत स्टेशन योजना, नीलगिरि माउंटेन रेलवे स्टेशन के ऐतिहासिक और स्थापत्य मूल्य को खतरे में डालती है।

#### परिचय

- नीलगिरि माउंटेन रेलवे (NMR) भारत के तमिलनाडु में एक प्रतिष्ठित विरासत रेलवे है, जो अपने ऐतिहासिक और स्थापत्य महत्व के लिए जाना जाता है।

- सबसे पहले 1854 में प्रस्तावित और 1908 में पूरा हुआ, यह 46 किलोमीटर लंबा मीटर-गेज रेलवे 19वीं सदी के उत्तरार्ध की इंजीनियरिंग को दर्शाता है, जिसमें नीलगिरि पहाड़ियों की खड़ी ढलानों पर चलने के लिए रैक और पिनियन ट्रेक्शन सिस्टम है।
- 2005 में, यूनेस्को ने NMR को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता दी। भारत के अन्य माउंटेन रेलवे में दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे और कालका शिमला रेलवे शामिल हैं।

Source: TH

## इंडियासाइज़(INDIAsize) पहल

### समाचार में

- भारत सरकार भारतीय शरीर प्रकारों के अनुरूप मानकीकृत शारीरिक माप स्थापित करने के लिए 'इंडियासाइज़' पहल शुरू करने जा रही है।

### इंडियासाइज़ पहल के बारे में

- भारत सरकार के कपड़ा मंत्रालय ने INDIAsize परियोजना को मंजूरी दे दी है।
- INDIAsize एक वैज्ञानिक शोध परियोजना है जो भारतीय जनसंख्या के प्रतिनिधि नमूने से मानवशास्त्रीय डेटा एकत्र करने पर केंद्रित है।
- इस डेटा का उपयोग व्यक्तियों के शरीर के आकार और माप को मैप करके तथा वर्गीकृत करके उनके लिए आकार पहचान संख्या विकसित करने के लिए किया जाएगा, जिससे भारत के लिए मानकीकृत शरीर के आकार के मानक स्थापित होंगे।
- इसका उद्देश्य भारतीय शरीर के प्रकारों के अनुरूप मानकीकृत शरीर माप स्थापित करना है।
  - वर्तमान आकार प्रणालियां अमेरिकी या ब्रिटिश मानकों पर आधारित हैं, जो भारतीय शरीर के प्रकारों के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती हैं।
- **INDIAsize का उद्देश्य:** भारतीय परिधान क्षेत्र के लिए विशिष्ट शरीर आकार मानकों को विकसित करके फिटिंग संबंधी मुद्दों का समाधान करना।
  - परिधान के फिट में असमानताओं और असंगतियों को सुधारना।

Source: [ET](#)

## केंद्र सरकार कामकाजी महिलाओं के छात्रावासों के लिए रैंकिंग शुरू करेगी

### सन्दर्भ

- महिलाओं के खिलाफ हिंसा के मामलों के बीच, केंद्र सरकार देश भर में कामकाजी महिलाओं के छात्रावासों के लिए रैंकिंग प्रणाली (वन-स्टॉप पोर्टल) शुरू करने की तैयारी में है।

### परिचय

- पोर्टल देश भर के प्रत्येक शहर में निजी खिलाड़ियों, संस्थानों और केंद्र तथा राज्य सरकारों द्वारा संचालित सभी वर्तमान छात्रावासों को सूचीबद्ध करेगा एवं उनकी रैंकिंग करेगा, जो कुछ मापदंडों पर आधारित होगा, जो कि अधिकांशतः उनकी सुरक्षा से संबंधित होंगे।
- इस कदम का उद्देश्य विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में बेहतर महिला कार्यबल भागीदारी सुनिश्चित करना है। पोर्टल अंततः देश के प्रत्येक शहर में सभी क्रेच की समान रैंकिंग भी बनाएगा।

### क्या आप जानते हैं?

- केंद्र सरकार के पास कामकाजी महिलाओं के लिए छात्रावास की सुविधा प्रदान करने के लिए एक वर्तमान योजना है, जिसे मिशन शक्ति के तहत शुरू किया गया है, जिसे 'सखी निवास' कहा जाता है।
- इस योजना को लागू करने के लिए, कामकाजी महिला छात्रावासों के लिए वित्तीय सहायता सीधे राज्य सरकारों को जारी की जाती है।

Source: [IH](#)

